

पराक्रम दिवस पर निबंध

Parakram Diwas Essay (250 word)

प्रस्तावना: भारत के महान स्वतंत्रता सेनानी नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती को सम्मान देने के लिए हर साल 23 जनवरी को 'पराक्रम दिवस' के रूप में मनाया जाता है। 'पराक्रम' शब्द का अर्थ है साहस, वीरता और शक्ति। यह दिन नेताजी के निडर व्यक्तित्व और भारत के स्वतंत्रता संग्राम में उनके अतुलनीय योगदान का प्रतीक है।

नेताजी का मानना था कि आजादी केवल प्रार्थनाओं से नहीं, बल्कि दृढ़ संकल्प और बलिदान से प्राप्त की जा सकती है। उन्होंने एक साहसी मार्ग चुना और ब्रिटिश शासन के खिलाफ लड़ने के लिए 'आजाद हिंद फौज' (INA) का गठन किया। उनका प्रसिद्ध नारा, "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा," आज भी करोड़ों भारतीयों के दिलों में देशभक्ति की ज्वाला प्रज्वलित करता है।

पराक्रम दिवस हमें नेताजी की अटूट देशभक्ति, कुशल नेतृत्व और एक स्वतंत्र भारत के उनके सपने की याद दिलाता है। उन्होंने अनुशासन, एकता और आत्मनिर्भरता पर जोर दिया, जो मूल्य आज के समय में भी अत्यंत प्रासंगिक हैं। उनके कार्यों ने सिद्ध किया कि राष्ट्र के प्रति सच्चा प्रेम साहस और समर्पण की मांग करता है।

निष्कर्ष: इस अवसर पर देश भर में विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम और भाषण आयोजित किए जाते हैं ताकि युवा पीढ़ी नेताजी के आदर्शों को समझ सके। पराक्रम दिवस केवल एक श्रद्धांजलि नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक के लिए राष्ट्र की सेवा ईमानदारी और निडरता से करने का संकल्प है।

पराक्रम दिवस पर हिंदी निबंध (500 word)

प्रस्तावना: भारत की धरती ने कई वीरों को जन्म दिया है, लेकिन नेताजी सुभाष चंद्र बोस जैसा व्यक्तित्व विरला ही होता है। उनकी 125वीं जयंती के अवसर पर भारत सरकार ने 23 जनवरी को 'पराक्रम दिवस' के रूप में घोषित किया। यह दिवस अदम्य साहस, निस्वार्थ सेवा और

राष्ट्रवाद का उत्सव है। इसका मुख्य उद्देश्य देश के नागरिकों, विशेषकर युवाओं को नेताजी के जीवन से प्रेरणा लेने के लिए प्रोत्साहित करना है।

नेताजी का प्रारंभिक जीवन और त्याग: सुभाष चंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी 1897 को ओडिशा के कटक में हुआ था। वे बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि के थे। उन्होंने इंग्लैंड में प्रतिष्ठित भारतीय सिविल सेवा (ICS) की परीक्षा उत्तीर्ण की, लेकिन अंग्रेजों की गुलामी स्वीकार करने के बजाय उन्होंने अपने पद से इस्तीफा दे दिया। उनका यह निर्णय दर्शाता है कि उनके लिए मातृभूमि की स्वतंत्रता किसी भी सुख-सुविधा से ऊपर थी।

आजाद हिंद फौज और संघर्ष: नेताजी का मार्ग उस समय के कई अन्य नेताओं से भिन्न था। वे सशस्त्र क्रांति में विश्वास रखते थे। उन्होंने विदेशों में रह रहे भारतीयों और युद्धबंदियों को एकत्रित कर 'आजाद हिंद फौज' का गठन किया। उनके "जय हिंद" और "दिल्ली चलो" जैसे नारों ने पूरे देश को एक सूत्र में पिरो दिया। उन्होंने दिखाया कि एक संगठित सेना के माध्यम से विदेशी हुकूमत की नींव हिलाई जा सकती है।

दूरदर्शी विचार और सामाजिक सुधार: नेताजी केवल एक सैनिक नहीं, बल्कि एक महान दूरदर्शी भी थे। वे एक ऐसे भारत का निर्माण करना चाहते थे जहाँ जाति, धर्म और लिंग के आधार पर कोई भेदभाव न हो। उन्होंने आजाद हिंद फौज में 'झांसी की रानी रेजिमेंट' बनाकर महिलाओं को युद्ध में बराबरी का स्थान दिया, जो उस समय एक क्रांतिकारी कदम था। वे अनुशासन और आर्थिक आत्मनिर्भरता को राष्ट्र की प्रगति की कुंजी मानते थे।

पराक्रम दिवस का महत्व: वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पराक्रम दिवस की प्रासंगिकता और बढ़ जाती है। आज जब देश विकास की नई ऊंचाइयों को छू रहा है, नेताजी के विचार हमें चुनौतियों का डटकर सामना करने की शक्ति देते हैं। शिक्षण संस्थानों और सरकारी संगठनों में आयोजित होने वाले कार्यक्रम युवाओं में नेतृत्व क्षमता और जिम्मेदारी की भावना विकसित करते हैं।

उपसंहार: पराक्रम दिवस हमें याद दिलाता है कि स्वतंत्रता एक बड़ी जिम्मेदारी है। नेताजी का जीवन हमें सिखाता है कि अन्याय के विरुद्ध कभी झुकना नहीं चाहिए और अपने लक्ष्यों के प्रति सदैव अडिग रहना चाहिए। यदि हम उनके बताए मार्ग पर चलें, तो हम वास्तव में एक सशक्त, समृद्ध और अखंड भारत का निर्माण कर सकते हैं। यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।
